

ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਸਿਰ ਤੇ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ॥ ੧ ॥ ਸਿਰ
ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ॥ ੨ ॥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਸਾਹਿਬ ਜੀ
ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ॥ ੩ ॥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਸਾਹਿਬ ਜੀ
ਸਾਹਿਬ ਜੀ ॥

करना होता है। (२) गद्य में कर्ता आदि अपने नियत क्रम में रखे जाते हैं; पद्य में यह नियम नहीं होता। (३) गद्य में प्रचलित शब्द अपने अधिकृत रूप में बोले जाते हैं; पद्य में कभी कभी विकृत रूप में भी बोले जाते हैं, जैसे दुःख को दूख।

बिना छन्द की रचना से छन्दोपद्य रचना में ये विशेषताएँ होती हैं। (१) छन्द का हर एक चरण अपने तोड़ में

छन्द की विशेषताएँ पूरा उतरता है। इससे छन्द पढ़ने में सुहावने प्रतीत होते हैं और सुस्वर गाए जाने हैं, अनप्य षट् प्यारे लगते हैं और जब राग रागिनियों में गाए जाते हैं तब तो चित्त को मोह ही लेते हैं। (२) पाणी के तीन रूप हैं—गद्य, पद्य, और गीति। पाणी का जो प्रभाव गद्य में है, पद्य में उससे कई गुना अधिक होता है और गीति में तो उससे भी कई गुना अधिक हो जाता है। सा गीति पाणी के प्रभाव की पराकाष्ठा है। इस गीति का आधार भी छन्द ही होता है; अतएव छन्द ही पाणी में ऊँचे से ऊँचा प्रभाव ले पाते हैं। (३) छन्द रचिकर होने हैं, उनमें जो लगना है, अनप्य जल्दी कण्ठस्थ होते हैं, उचिन भवमर पर उन्हीं अक्षरों में सुहाव जाते हैं और कण्ठस्थ बने रहते हैं।

छन्दों में ऐसी मोहनी शक्ति है कि हर एक व्यक्ति उनसे प्यार करता है और हर एक अवस्था में प्यार छन्दों की संबंधित करता है। छन्द कविजनों के बहुत प्यारे हैं, यह तो जगत्प्रसिद्ध है। पर क्या कोई ऐसा

व्यक्ति भी है, जिसको ये प्यारे न लगते हों ?

देखो, एक ओर वह ब्रह्मजाली अपने ब्रह्मानुभव को छन्दों में गाता हुआ मस्त हो होकर झूम रहा है। दूसरी ओर वह भक्त प्रभु-भक्ति के गीत गाता हुआ प्रेम में मग्न हो रहा है। तीसरी ओर एक धर्म शास्त्र धर्म की व्यवस्थाओं को और नीतिशास्त्री नीति के नियमों की प्रभावशाली बनाने के लिए छन्दों में रचता कर रहा है।

सारित्रियों की धान भी रहने दो। वह देखो, गहरिये अरबी भेड़-बकियों के पीछे और गदाते खपता गाँवों के पीछे मोटे मोटे छन्द (मद) रचते और गाने फिरते हैं। मेलों में मलय गीत भी अपने प्यारे छन्द रच गाने और अपने ब्रह्मजाली के साथ घुड़ जात में गाने फिरते हैं। मेलों में लहरी-लहरीयाँ उत उत मोह के लिये छन्द होतें हैं। गजरी चरगा बाला दुर्ग छन्द गाना है। लहरी चरगा दुर्ग छन्द गाना है। चित्त में सुख और चित्तरी छन्दों में गाना है। घर के लिए मोह छन्दों में रचे जाते हैं और घर में छन्दियों पर छन्द हुल्लास जाते हैं। लहरी लहरी, चित्त का पीड़ा छन्द। मे, चित्त का लहरी छन्दों में, लहरी का लहरी छन्द। चित्त लहरी में और लहरी छन्दों में गाने जाते हैं। छन्द लहरी में लहरी के लहरी लहरी और लहरी में लहरी का लहरी चित्त लहरी लहरी के लहरी और चित्त लहरी लहरी लहरी है। लहरी चित्त लहरी लहरी लहरी में लहरी लहरी लहरी लहरी है।

स्वप्ति भी है, जिनको ने प्यारे न छपते हैं ?

हेलो, एक ओर यह प्रकृति अपने प्रकृतानुभव को छन्दों
से सजा हुआ मस्त हो होकर घूम रहा है। दूसरी ओर यह भक्त
प्रभु-कवि के गीत गाता हुआ प्रेम में मग्न हो रहा है। तीसरी
ओर एक धर्म साक्षी धर्म की व्यवस्थाओं को और नीतिशास्त्रों
की नीतियों को प्रभावशाली बनाने के लिए छन्दों में रचना
कर रहा है।

छन्दों की बात भी रहने दो। यह वेसो, गड़रिय
अनने में-बहरियों के पाँछ और ग्याले धपना गाँवों के पाँछ
भी भी छन्द (सद) रचने और गाने फिरते हैं। मेलों में
अनने और ने अपने प्यारे छन्द रच लाते और अपने प्रामाण्य
बाद के साथ पूरा जोरा से गाने फिरते हैं। गेलों में छड़के
छाँवना इस इस तरह के नियत छन्द बोलते हैं। शिरिया चरक
काका दुः छन्द गाते हैं। बड़ी पोंसती हुरं छन्द गाती है।
गेलों में लुहण और छोड़िया छन्दों में गाती है। घर के कि
केंद्रे छन्दों में रचे जाते हैं और घर से छन्दियों पर।
एकतर जते हैं। कदा तक कहें, विरह को पीड़ा र
के निरुधर हुरं छन्दों में, मृत्यु का शोक छन्दों में, पि
छन्दों में और के छन्दों में गाए जाते हैं। छन्द उनसवों
के बने रचे और शोक में मन्दर का उवाच निकल
हुरं के छन्द और निदाने बने होते हैं। इसी लि
कलशों में सर को निरुधर होते हैं।

भाए हैं, कई उर्दू में। जब नए छन्द न बनें, ऐसी कोई रोक नहीं। अक्षरों या मात्राओं का जो भी तोल बोझने-माने में शोभा पाएगा, वही एक छन्द बन जायगा। हाँ, मिस्र, और हिन्दी में छन्दों के जो प्रस्ताव दिये हैं उनमें एक एक छन्द के बनने भेद बन जाने हैं, कि दूसरी भाषाओं के तथा संस्कृत में छन्द भी उनके किसी एक प्रकार में आ ही जाते हैं। तैत्तिरीय ब्राह्मण का यह उर्दू पद्य—

रहित अब ऐसी जगह, चटकर जहाँ कोई न हो।

हमसुखन कोई न हो, और हम दुर्घा कोई न हो।

वे दुर्घाहीनार ना, एक घर बनाना चाहिये।

कोई हमसाया न हो, भी पानगी कोई न हो।

वर्द्धन गर बागार ना, कोई न हो नीमारदार।

और गर गर जादर, तो मादगी कोई न हो।

यह २६ मात्राओं का छन्द है। १२, १४ पर वर्जित है। पहली पंक्ति में 'रहित' और चौथी में 'वर्द्धन' का ए इत्य बोझा जाता है। जो यह २६ मात्राओं के गीतिका छन्द का एक भेद बन जाता है। पर मन्त्र काव्य ना यह है, कि एक ही गिरणी के अक्षरों में गुण ऋतु के अन्त-भेद और गनि-यनि-भेद से विचित्र विचित्र छन्द बन जाते हैं। जैसे १७ अक्षरों के छन्द

१, ११ पर वर्जित हो और गुण ऋतु का नियम— 'य य न न
(य० टि०) य न य य य र य न, य यने यद्वारा लो और
ए ऋ के चक्कर हैं। ऐसी उपमा अन्वय का लक्ष्यीकार प्रचलन।

म ल ग के रूप में हो तो दिव्यरिणी होता है । जैसे—
 अनुटी आभा से, सरस सुपमा से मुख से ।
 बना जो देवी थी, बहु गुणमयी भू विपिन थी ॥
 निराले फूलों की, विविध दलवाली अनुपमा ।
 जहाँ बूटी गाना, बहु फलवती थी विलसती ॥

(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

और १७ हां अक्षरों के छन्द की ४, ६ और ७ पर सति
 हो और गुरुत्त्व का नियम म म न न न ग ग के रूप में हो
 तो मन्दोदरालता होता है । जैसे—

लाटे हुं, लम टल गया, लालिमा लोम छाई ।
 ऐसी बातें, लमबर जने, जयनि फैली दिशा मे ।
 लाला हो गे, लबाल लब बातें, लारि आलोल पृथे ।
 लीरे धारे, दिगबर बने, लामरी लान होनी ।

(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

इसलिए समझाएँ छात्रों में कि जो सति-सति पर
 दूसरे से : मन्दोदर हो तो उस दिव्यरिणी का भेद दिखाने
 के लिए मन्दोदर होता उचित है और सति-सति नियमों
 दूसरे से मन्दोदर समझाएँ छात्रों में पर छन्द के बांध
 भेद मानने चाहिए ।

मन्दोदर के पर छन्द का नाम मन्दोदर है : मन्दो

हैं होने का यत्न किया है। भ्रमचलित या भ्रमप्रचलित छन्द
 छोड़ दिये हैं ताकि विद्यार्थी कलापरचक्र हमारे में न पड़े।
 हमें विश्वास है कि इस ग्रन्थ को सम्पूर्ण समझ कर विद्यार्थी
 छन्द विषय से न केवल गूढ़ ग्रन्थों को ही, बरन् नए छन्दों
 को भी भली भाँति जान पायेंगे।

छन्द-रत्नावली

प्रथम अध्याय

छन्द-रचना

(१) अथ छन्दः—छन्दो हे वाचस्पति, सुखादुत्तमं
लभे श्रीं लभे हे तिर वाते इव समान्य विदुषो वा ज्ञाना
अद्वयम् है—अथ ल भवे, सुखान्धु लभ, लभः लभि, लभि,
लभ्य, श्रीं लभ ।

अथ

(१) अथ छन्दः—छन्दो हे वाचस्पति, सुखादुत्तमं लभे श्रीं लभे हे तिर वाते इव समान्य विदुषो वा ज्ञाना अद्वयम् है—अथ ल भवे, सुखान्धु लभ, लभः लभि, लभि, लभ्य, श्रीं लभ ।

यह इन्द्रजिज्ञासु का एक चरण है। हमारे ज्ञान में गुण होने चाहिये। यहाँ अभिमत दो जगहों में वि हो परे भंग्याग है, हम लिख कि गुण है पर न कछु है। इस बात का गुण माना और पञ्चा प्रायणा क्योंकि यहाँ गुण का प्रत्ययक है।

(ग) संगीत में पूर्ण के उक्त पर यदि तोर न पड़े तो।
हनु ही माना जाना है। जैसे—

माना गुमारी जनि ही विविध।

यही गुमारी को न मर्याद में पूर्ण होने पर भी माना गया क्योंकि यही गुमारी 'गुमारी' का पदा ज्ञाना और न पर और नहीं बदला। समस्त रस कि नद, रस मे।
अनु बाव हटका पदा जाना है।

साधन कहार्ह गुमार्ह न नारी।

यह संगीत का एक चरण है। इसकी साधनी १५ है।
साधनी का पद १५ है १५ का गुण मान, ना साधनी १५ :
इन्द्र १ अनुमान एक अर्थ जनि है जो नर के उक्त
होने जनिमया से इन्द्र बना है पर नन्द विन्दु का
जनि नर, यही विन्दु नर का उक्त ११ को जनि
कह करके गुण में गुमार्ह नारी का लक्षण है। इन गुण
का अनुमान एक चरण है जो अनुमान गुण मान का वि
मान है १५ यह नर अनुमान एक नर की लक्षण है
कहा गया है।

[illegible]

मन्त्रः सर्वान् भूतान् भुङ्क्ते, यः पश्यति, तेन भुङ्क्ते ।

(३) महाराष्ट्र राज्य सरकार (३) महाराष्ट्र राज्य सरकार

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

मम मने ह हय मम हय मम मने हय ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

मन्त्रों के प्रयोग, तथा और लक्षण-लक्षण का वर्गीकरण

ਸਿੱਖ ਨਾਨਕਾਂ ਦੇ ਭਾਸ਼ਾ ।

一、
 二、
 三、
 四、
 五、
 六、
 七、
 八、
 九、
 十、

1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 2679, 26

[illegible]

一、二、三、四

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

— 1 —

2010年12月10日 星期五

ऐसा एदे—

गैह शदा उज्जति की गहो ।

मेला बन समाज मे रहो ॥

तो इस मे खोखोला की गति का जाती है । गति को जान पहचानने है और यह पहचान अव्यासवदा होती है ।

(क) यति विराम अथवा ठहराव को कहते हैं। पाद के अन्त में तो सभी छन्दों के यति होती हैं, पर बड़े छन्दों में एक ही पाद में दो या तीन यतियाँ होती हैं । यति के अनुसार विराम करने, सोलने से छन्द अधिक सुहावने बन जाते हैं । ऐसे शिखरिणी और मरदाभान्ता के उदाहरण (पृष्ठ ७) ।

खरण

(१—(क) छन्द की एक पूरी धारा को खरण, पाद का एक कहते हैं । खरण मरदा खर होते हैं । जैसे—

(१) ३ मरदाभो का मुखति छन्द ।

तिव तिद कर, यदि मुख रहो ।

ओ मुखति है ना मुखति है ।

‘मरदा खरिद’

(२) ११ मरदाभो का मरदाभ छन्द ।

धर्म के मत के अधर्म के बर्णन करता करी ।

देव हर धर्म का मुखाराम के बर्णन करता करी ।

एक धर्म के अलग-अलग धर्म करता करी ।

बोध-बोध मरदा भिन्न के बर्णन करता करी ।

‘मरदाभ छन्द’ ।

उ.प्र. ६) श्री सुबो का मेम (१) दिनांक २०/०५/०६ श्री सुबो का मेम (२) २०/०५/०६ श्री सुबो का मेम । इन सब के अनुसार जमाना सीटें दिए जाते हैं ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

(१) विद्युत् संचयन से विद्युत् बचत है ।

॥१॥ ॥२॥ ॥३॥ ॥४॥ ॥५॥ ॥६॥ ॥७॥ ॥८॥ ॥९॥ ॥१०॥ ॥११॥ ॥१२॥ ॥१३॥ ॥१४॥ ॥१५॥ ॥१६॥ ॥१७॥ ॥१८॥ ॥१९॥ ॥२०॥ ॥२१॥ ॥२२॥ ॥२३॥ ॥२४॥ ॥२५॥ ॥२६॥ ॥२७॥ ॥२८॥ ॥२९॥ ॥३०॥ ॥३१॥ ॥३२॥ ॥३३॥ ॥३४॥ ॥३५॥ ॥३६॥ ॥३७॥ ॥३८॥ ॥३९॥ ॥४०॥ ॥४१॥ ॥४२॥ ॥४३॥ ॥४४॥ ॥४५॥ ॥४६॥ ॥४७॥ ॥४८॥ ॥४९॥ ॥५०॥ ॥५१॥ ॥५२॥ ॥५३॥ ॥५४॥ ॥५५॥ ॥५६॥ ॥५७॥ ॥५८॥ ॥५९॥ ॥६०॥ ॥६१॥ ॥६२॥ ॥६३॥ ॥६४॥ ॥६५॥ ॥६६॥ ॥६७॥ ॥६८॥ ॥६९॥ ॥७०॥ ॥७१॥ ॥७२॥ ॥७३॥ ॥७४॥ ॥७५॥ ॥७६॥ ॥७७॥ ॥७८॥ ॥७९॥ ॥८०॥ ॥८१॥ ॥८२॥ ॥८३॥ ॥८४॥ ॥८५॥ ॥८६॥ ॥८७॥ ॥८८॥ ॥८९॥ ॥९०॥ ॥९१॥ ॥९२॥ ॥९३॥ ॥९४॥ ॥९५॥ ॥९६॥ ॥९७॥ ॥९८॥ ॥९९॥ ॥१००॥

सुखं भवति तदा भवति ।

सुखदुःख, सुखदुःख, सुखदुःख ॥

(੨) ਸਾਧੇ ਕਾਜ, ਘੋਰ ਸਾਧਨ ਤੇ, ਘੋਰ ਭਾਗ ਵਾਲੇ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

(१५३)

(क) सन्तान सन्तानों से सम्बन्धित सब बातें :

Figure 1

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840.

संस्कृत-संज्ञा-सूची

मन्त्रः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

— १११ —

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विधाता छन्द

कलेश्वरी बात है तेरे निराले प्रेम-बन्धन में ।
 उलझ कर भक्त उलझन में जगत को पार करते है ॥
 न होती आह नो मेरो दया का क्या पता होता ।
 उसी से हीन जम दिन रात टाटाबार करते है ॥
 हमें तू सीखने हे आँखों से प्ये जीवन का ।
 जगत के नाप का हम नो सही उपहार करने है ।

(रामकृष्ण विद्यापी)

सोमरा

(१) विष्णु का लो की तुह—

स्वर्ग, मोहि न सुख, असी विद्यावन भात दिन ।
 हर दिन हेतु सुख, मान स्वर्ग स्वर्गों भलो ।

(श्रीम)

(२) हे लो की तुह का मेल—

दोहा

हरण का लो की तुह, हरण लो की तुह ।
 हरण का लो की तुह, हरण लो की तुह ।

(रामकृष्ण विद्यापी)

वाराणसी की तुह के स्वर्ग-लोक है हीन की स्वर्ग-
 की लो की तुह का मेल है । श्रीम—

सूर्यदा

हरण, तुह लो की तुह के स्वर्ग-लोक है हीन की स्वर्ग-
 की लो की तुह का मेल है । श्रीम—

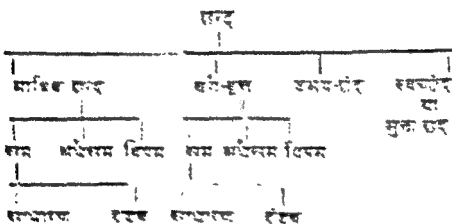
(ग) उभय छन्दों में मात्रा-नियम और वर्ण-संख्या दोनों

का ध्यान रखा जाता है ।

(घ) वृद्धछन्द छन्दों में दृष्टि केवल छंद पर रहती है।

और बोरों का ध्यान नहीं होता ।

हीने के छन्दों-दृष्ट में इन भेदों का खरों ध्यान है ।



मार्जित छन्द काव्य में एक ही मात्रा से हो जाते हैं । जैसे—

एकमविह-य, य, य, य । द्विमविह-य, य, य, य ।

अथवा-य, य, य, य । इसी प्रकार वर्ण-दृष्ट में एक वर्ण से

काव्य होते हैं । एक वर्ण छन्द छन्द-दृष्ट में है । एक में बोरों

का ध्यान रखा नहीं होता । वृद्धछन्द वृद्ध में एक मार्जित छन्द का

संज्ञाओं से और वर्ण-दृष्ट छन्द का वर्णों से काव्य होते हैं ।

छन्द काव्य में वर्ण-दृष्ट का वृद्धछन्द—यह है । वृद्ध

छन्द । एक वर्ण । उभय-दृष्ट । और छन्द वर्णों का वृद्धछन्द—

यह वर्ण है, वर्णों वर्ण है । उभय-दृष्ट है । वृद्ध छन्द वर्ण है ।

(वृद्धछन्द वर्ण-दृष्ट) ।

उहाँ सिद्धि होगी धरी हुई है ।

(मैथिली शरण गुप्त)

(६) वर्णाक्षरम—सुप्रसिद्धा—(प्रथम चरण म म र य, सन
चरण न ज उ र न)

पिरि पिरि सुमि कै काँ मयेनी ।

दिधि एह काँन प्रवार की समेनी ।

रैत धरनि बनैत—रौपुरी के ।

सुपनि छु सुप्रिय बनैत भीमुरी के ।

(भिरगरी दास)

(६) वर्ण-क्षरम—सुप्रसिद्ध—(प्रथम चरण स उ स र द्वितीय
म म क न ह्रीं र म म म क ह्रीं स उ स उ म
तद अक्षरिदे कसक काम । तदक्षर मरिदे मता हय ।
मरि मरु मर ऊरु हय । मरिदे कामे रिं त हय हय हय
भरुवरि

रमर-रमर

(मरिह हरीमरिह मे हरी—रमर मरमर)

रमर, रमर, रमरमर, रमरमर, रमर, रमरमरमर ।

रमरमर मर, रमर, मरिह, मरिह, मरिह ।

रमरमर मरुह मर मरमर, मर, मरिह, मर मर ।

रमरमर, मरमर है मरिह रमर मर मरमर है ।

रमरमर मरुह

मुक्त-छन्द

मर देने हो—

बार-बार प्रिय, करुणा की किरणों से,
 क्षुब्ध हृदय को पुलकित कर देते हो ।
 मेरे अन्तर में धाने हो देव निरन्तर,
 कर जाने हो क्या मार मरु,
 बार-बार कर-कंज बढ़ा कर;
 मन्वन्तर में मेरा रोदन
 निरुधरा के भँसल को,

करता है सृण सृण—

कुसुम-कपोलों पर वे झोटा शिशिर कण,
 मुझ किरणों में अछ पोंछ लेते हो,
 सब प्रमाण जीवन में मर देने हैं ॥

(सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला')

द्वितीय अध्याय

मात्रिकामनोबन्ध (साधारण)

जिसे मात्रिक हस्तों के चाले चलने में मात्रा-बन्ध
सम्बन्ध हो, वे मात्रिक मात्र-सम्बन्ध होते हैं।

(१) मात्रिक

(१) पुत्र के मात्रिक हस्तों में मात्रा-बन्ध ।

जैसे मात्रिक हस्तों में मात्रा-बन्ध ।

(२) मात्रिक हस्तों में

मात्रिक हस्तों के मात्रिक हस्तों में मात्रा-बन्ध ।

(३) मात्रिक हस्तों के मात्रिक हस्तों में मात्रा-बन्ध ।

जैसे मात्रिक हस्तों के मात्रिक हस्तों में मात्रा-बन्ध ।

(४) मात्रिक हस्तों के मात्रिक हस्तों में मात्रा-बन्ध ।

जैसे मात्रिक हस्तों के मात्रिक हस्तों में मात्रा-बन्ध ।

- (घ) मुनि ज्ञान-मानस- हंस । अप जोग - जाग^१ प्रसार ॥
जग-मांस हे दुख-जाल । सुख हे कहाँ रहि काल ॥
- (ङ) नई रात्र हे दुखामूल । सब पाप को अनुकूल ॥
बच ताहि मे अगिराय । कहि कीन नरकहि जाय ॥
- (च) अद्भुत भाग बाग नद्वान । अब देखिये बहू भाग ॥
कल कल सो मधुक । मलियों रमै जन मुनः ॥
- (छ) सुनि रामचंद्र कुमार । पनु जानिये रहि बार ॥
पुनि बेगि ताहि बड़ाव । यश लोक लोक बढ़ाव ॥
- (ज) मह मात लक्ष्मण राम । अद्भुत किये जानि प्रणाम ॥
बृगुनन्द आशिर दीन । रण होहु मत्तप मयीन ॥
- (झ) सुनु राम जाल-समुद्र । नव बन्धु हे भनि शुद्र ॥
मम चारवान् कोंट । अब कियो चादन लोच ॥
- (ञ) नम कया कयो बन आजु । त्रिन तीरा रात्रन रात्रु ॥
त्रिन नाम । पनिदेव । कहि सरे मानिन मेव ॥

(केदारदास)

२. उदाहरण : अन्य नाम ब्रह्मणि)

इत्यादि छन्द के प्रत्येक वाद में १३ मात्राएँ होती हैं ।

१. इत्यादि नामक एक धार्मिक संस्कृत छन्द और भक्त नाम-समय के वाक्य छन्द प्रत्येक वाद में १३, १३ मात्राएँ होती हैं, इस वंश सब वाक्यों में १३, १३ मात्राएँ होती हैं, वाक्य इस के विचार करने में १२, १२ और सब में १३, १३ । इस में इस में बड़ी अन्तर है ।

पाद से अन्तिम बलों में सुर-रुद्र का कोई विशेष नियम नहीं होता । १। ११ की माता अक्षर्य रूद्र होती है । जैसे—

(क) उरगा होता ईश से, और दुर्गा की हाथ से ।

निदरा होता होब बर, राम अन्तिम अन्त्या से ।

(ख) लाली अक्षर्य मौन है, मेम-पंथ है दूर का ।

लुगना है मय का ली, लुगी पर अक्षर्य का ।

(ग) मय-अक्षर्य रुद्र-रुद्र से, अक्षर्य अक्षर्य हम पर गये ।

अक्षर्य गये लो लाली पर, लाली-रुद्र हो बर गये ।

(घ) उरगा से बल मेम हो, जिस का अक्षर्य-रुद्र हो ।

अक्षर्य गये का हाथ हो, लाली हम पर अक्षर्य हो ।

(ङ) लाली मय अक्षर्य-रुद्र से, हम अक्षर्य-रुद्र दिग्ग-से ।

अक्षर्य अक्षर्य पर अक्षर्य, लाली बल अक्षर्य से ।

(च) लाली से लाली अक्षर्य-रुद्र, हम अक्षर्य-रुद्र हो अक्षर्य ।

अक्षर्य-रुद्र से अक्षर्य का, लाली मय लाली अक्षर्य ।

(१० मय अक्षर्य रुद्र)

१. लाली

लाली, लाली से अक्षर्य लाली से । अक्षर्य लाली है । लाली
 व लाली से लाली से लाली अक्षर्य (१११) लाली लाली
 लाली अक्षर्य लाली है । जैसे—

१) अक्षर्य-रुद्र से लाली,

अक्षर्य-रुद्र से लाली ।

क्यों ध्यान-भंग तुम बैठे,

मर कर फूलों में डाली ॥

(ग) सुन्दर फूलों की फुहियाँ,

झग-झग तुम पर शरती हैं।

मत-मस्तक पूछ बाँधे हैं,

पतियाँ पवन करती हैं ॥

(गुलावरन पात्रवेपी)

(ग) क्यों छटक रहा दुल मेरा,

ऊगा की मृदु पलकों में ।

हाँ ! उलझ रहा सुख मेरा,

संख्या की घन भण्डों में ॥

(घ) उच्छ्वास और भीम में,

विध्राम क्या भोगा है ।

सों आँखों में निद्रा,

बन कर गगन होता है ॥

(ङ) मग्नता की मिथन अनोखा,

बह बहती कुछ ममताओं ।

ऊगा की रक्त निराशा,

कर देगी प्रण कदाही ॥

(च) फिर विश्व भीता होवे,

हे मम को लाली प्यासे ।

तुम में पूछ मनु का हँसे.

ਸੰਤਾਂ ਦੀ ਸੇਵਾ ॥

(उपशान्त प्रसाद)

(७) तब घर घर में प्रफुल्लित ।

इति मोरस दण्डगारी ।

मित्र हाथ सर्व मज बांधता ।

उपगत-सद मरग संज्ञा ।

(ब्रह्मदास दास ।

Y. हारुनि

हमारे देश के हर एक बच्चे में १४ गजब हाँसी है ।
 जिसके साथ सुर हाँसी है । इस के साथ में एक कीड़ों के
 बच्चे हर एक बच्चे है । जैसे —

(४) "सर्वज्ञानं सर्वभूतानां
सर्वज्ञानं सर्वभूतानां
सर्वज्ञानं सर्वभूतानां
सर्वज्ञानं सर्वभूतानां
सर्वज्ञानं सर्वभूतानां
सर्वज्ञानं सर्वभूतानां

(८)

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

(7) 1. 1950-1951 2. 1952-1953 3. 1954-1955 4. 1956-1957 5. 1958-1959 6. 1960-1961 7. 1962-1963 8. 1964-1965 9. 1966-1967 10. 1968-1969 11. 1970-1971 12. 1972-1973 13. 1974-1975 14. 1976-1977 15. 1978-1979 16. 1980-1981 17. 1982-1983 18. 1984-1985 19. 1986-1987 20. 1988-1989 21. 1990-1991 22. 1992-1993 23. 1994-1995 24. 1996-1997 25. 1998-1999 26. 2000-2001 27. 2002-2003 28. 2004-2005 29. 2006-2007 30. 2008-2009 31. 2010-2011 32. 2012-2013 33. 2014-2015 34. 2016-2017 35. 2018-2019 36. 2020-2021 37. 2022-2023 38. 2024-2025 39. 2026-2027 40. 2028-2029 41. 2030-2031 42. 2032-2033 43. 2034-2035 44. 2036-2037 45. 2038-2039 46. 2040-2041 47. 2042-2043 48. 2044-2045 49. 2046-2047 50. 2048-2049 51. 2050-2051 52. 2052-2053 53. 2054-2055 54. 2056-2057 55. 2058-2059 56. 2060-2061 57. 2062-2063 58. 2064-2065 59. 2066-2067 60. 2068-2069 61. 2070-2071 62. 2072-2073 63. 2074-2075 64. 2076-2077 65. 2078-2079 66. 2080-2081 67. 2082-2083 68. 2084-2085 69. 2086-2087 70. 2088-2089 71. 2090-2091 72. 2092-2093 73. 2094-2095 74. 2096-2097 75. 2098-2099 76. 2100-2101 77. 2102-2103 78. 2104-2105 79. 2106-2107 80. 2108-2109 81. 2110-2111 82. 2112-2113 83. 2114-2115 84. 2116-2117 85. 2118-2119 86. 2120-2121 87. 2122-2123 88. 2124-2125 89. 2126-2127 90. 2128-2129 91. 2130-2131 92. 2132-2133 93. 2134-2135 94. 2136-2137 95. 2138-2139 96. 2140-2141 97. 2142-2143 98. 2144-2145 99. 2146-2147 100. 2148-2149 101. 2150-2151 102. 2152-2153 103. 2154-2155 104. 2156-2157 105. 2158-2159 106. 2160-2161 107. 2162-2163 108. 2164-2165 109. 2166-2167 110. 2168-2169 111. 2170-2171 112. 2172-2173 113. 2174-2175 114. 2176-2177 115. 2178-2179 116. 2180-2181 117. 2182-2183 118. 2184-2185 119. 2186-2187 120. 2188-2189 121. 2190-2191 122. 2192-2193 123. 2194-2195 124. 2196-2197 125. 2198-2199 126. 2200-2201 127. 2202-2203 128. 2204-2205 129. 2206-2207 130. 2208-2209 131. 2210-2211 132. 2212-2213 133. 2214-2215 134. 2216-2217 135. 2218-2219 136. 2220-2221 137. 2222-2223 138. 2224-2225 139. 2226-2227 140. 2228-2229 141. 2230-2231 142. 2232-2233 143. 2234-2235 144. 2236-2237 145. 2238-2239 146. 2240-2241 147. 2242-2243 148. 2244-2245 149. 2246-2247 150. 2248-2249 151. 2250-2251 152. 2252-2253 153. 2254-2255 154. 2256-2257 155. 2258-2259 156. 2260-2261 157. 2262-2263 158. 2264-2265 159. 2266-2267 160. 2268-2269 161. 2270-2271 162. 2272-2273 163. 2274-2275 164. 2276-2277 165. 2278-2279 166. 2280-2281 167. 2282-2283 168. 2284-2285 169. 2286-2287 170. 2288-2289 171. 2290-2291 172. 2292-2293 173. 2294-2295 174. 2296-2297 175. 2298-2299 176. 2300-2301 177. 2302-2303 178. 2304-2305 179. 2306-2307 180. 2308-2309 181. 2310-2311 182. 2312-2313 183. 2314-2315 184. 2316-2317 185. 2318-2319 186. 2320-2321 187. 2322-2323 188. 2324-2325 189. 2326-2327 190. 2328-2329 191. 2330-2331 192. 2332-2333 193. 2334-2335 194. 2336-2337 195. 2338-2339 196. 2340-2341 197. 2342-2343 198. 2344-2345 199. 2346-2347 200. 2348-2349 201. 2350-2351 202. 2352-2353 203. 2354-2355 204. 2356-2357 205. 2358-2359 206. 2360-2361 207. 2362-2363 208. 2364-2365 209. 2366-2367 210. 2368-2369 211. 2370-2371 212. 2372-2373 213. 2374-2375 214. 2376-2377 215. 2378-2379 216. 2380-2381 217. 2382-2383 218. 2384-2385 219. 2386-2387 220. 2388-2389 221. 2390-2391 222. 2392-2393 223. 2394-2395 224. 2396-2397 225. 2398-2399 226. 2400-2401 227. 2402-2403 228. 2404-2405 229. 2406-2407 230. 2408-2409 231. 2410-2411 232. 2412-2413 233. 2414-2415 234. 2416-2417 235. 2418-2419 236. 2420-2421 237. 2422-2423 238. 2424-2425 239. 2426-2427 240. 2428-2429 241. 2430-2431 242. 2432-2433 243. 2434-2435 244. 2436-2437 245. 2438-2439 246. 2440-2441 247. 2442-2443 248. 2444-2445 249. 2446-2447 250. 2448-2449 251. 2450-2451 252. 2452-2453 253. 2454-2455 254. 2456-2457 255. 2458-2459 256. 2460-2461 257. 2462-2463 258. 2464-2465 259. 2466-2467 260. 2468-2469 261. 2470-2471 262. 2472-2473 263. 2474-2475 264. 2476-2477 265. 2478-2479 266. 2480-2481 267. 2482-2483 268. 2484-2485 269. 2486-2487 270. 2488-2489 271. 2490-2491 272. 2492-2493 273. 2494-2495 274. 2496-2497 275. 2498-2499 276. 2500-2501 277. 2502-2503 278. 2504-2505 279. 2506-2507 280. 2508-2509

६. चौबोला

चौबोला छंद के प्रत्येक चरण में १५ मात्राएं होती हैं
अन्तिम दो वर्ण कमराः लघु, गुरु होते हैं। जैसे—

(क) मित्र सकल निज जीवन करो,
हृदय बीच छुम गुण-गण धरो ।
गैल सदा उद्यति की गहो,
मेरा वन सम्राज में रहो ॥

(रामनरेश त्रिपाठी)

७. चौपई (अन्य नाम—त्रयफरी)

चौपई के प्रत्येक पाद में १५ मात्राएं होती हैं। हर एक
चरण के अन्तिम दो वर्ण कमराः गुरु लघु होते हैं। जैसे—

(क) कर्मके शिक्षा-कार्य समाप्त,
विद्यालय की पढ़ाई प्राप्त ।
निर तुम ग्रामों में कर काम,
ग्रामोणों का करो विकास ॥

(ख) हिन्दू-मुसक, उठो तुम भात्र,
रक्षो निज सम्राज की छात्र ।
हो तुम पर विमु की वर-वृष्टि,
शर्मा मुझी पर सादा-वृष्टि ॥

(ग) भूमि भूँद न पीरो टीक,
सौच भ्रमस्त देखो तुम टीक ।
करो न असमय का आछाप,

इस के आगे ? बिदा बिरोध,
हुए दम्पनी फिर अनिमेष ।
किन्तु अहाँ है मनोनिधोग,
वहाँ कहीं का विरह विधोग !

(मैथिली शरण गुप्त)

५९. पादाकुलक

पादाकुलक के प्रत्येक चरण में १६ मात्राएं होती हैं ।
हर एक चरण में चार चार चौकल होने हैं । जैसे—

(क) पायस पाण्डित्य अनि अनुरागा ।

होइ निरामिष कबहुं कि कागा ॥

संत सहहिँ दुख परहिन छागी ।

पर दुख हेत भवत भमागी ॥

(ख) सेवक सुख चह माख भिखारी ।

व्यसनी धन सुभगति व्यभिचारो ॥

छोभी जस चह चारु शुमानी ।

नम दुहि वृध चहत ये मानो ॥

(ग) सुमति कुमति सब के उर रहरी ।

नाथ पुरान निगम भस कहरी ॥

अहाँ सुमति तहँ सम्पनि नाना ।

अहाँ कुमति तहँ विपति निदाना ॥

(घ) निज सुख बिन मन होइ कि थोरा ।

परस कि होइ बिहीन समीरा ॥

कपनिडं गितिकि बि. दिन विम्वारसा ।

दिन हरि भजन बि. भवभय नारा ।

(मुत्तलीदास)

(५) एत एत शर्म गुनि भग लोभे ।

एतसिज कृते कानिस्त भुले ॥

जानवर होँ यदु भग होँ ।

एतणि न जाति उर भरदाही ॥

(बेंदायदास)

एतदुक्त एतों से प्रत्येक खरण से खार खार खोहर है ।

एतल से लिए 'म' एत से प्रथम खरण होँ हो परीक्षा करने ।

खोहर = १ । १ = ४ मादा या बला (खोहर)

मुक्त एत = १ । १ । १ = " " "

मादलि = १ । १ = " " "

मादी = १ । १ = " " "

- १ - एतदि

एतदि एत, एतदुक्त का एत एत मेर है । एतदे प्रत्येक
एत से एत से एत प्रत्येक एत है । उक्ति—

(६) मादु केर, मादलिमाद,

हे विम्वारिक एत एतिका ।

एत होर एत एत है एतल

एतु होर एतिका एत एतल ।

/ एतदुक्त विम्वारिक :

द्विष्ट छानि देवदत्तः भूष प्रजापति ।

बोर्ड निर्देशानुसार निगम अनुसूची अनुसार

(५) मारग होर आबरे होर भाषा ।

संविन सरोर ओ गाल वजगद ॥

शिवदत्तं दत्तं-रत्तं ओम् ।

सादर है इत्येतत् सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं ।

(४) सोम वरदान और हर-धन-हारी ।

ਭੀ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ ਕਿ ਕੜਾ ਆਖਾਰੀ : ੪

કોઈ જગ્યાએ મુજબની જગ્યા :

॥ तिष्ठन्मत्तुल्यं सुखं देवदत्तम् ॥

(५) निम्नलिखित में से एक-एक सत्य और एक-एक असत्य कथन चुनिए :

संस्कृत-विभाग

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

1. *Journal of the American Medical Association*, 1997; 277: 103-107.

(॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥)

12. 5. 2004

1-2-3-4-5-6-7-8-9-10-11-12-13-14-15-16-17-18-19-20-21-22-23-24-25-26-27-28-29-30-31-32-33-34-35-36-37-38-39-40-41-42-43-44-45-46-47-48-49-50-51-52-53-54-55-56-57-58-59-60-61-62-63-64-65-66-67-68-69-70-71-72-73-74-75-76-77-78-79-80-81-82-83-84-85-86-87-88-89-90-91-92-93-94-95-96-97-98-99-100-101-102-103-104-105-106-107-108-109-110-111-112-113-114-115-116-117-118-119-120-121-122-123-124-125-126-127-128-129-130-131-132-133-134-135-136-137-138-139-140-141-142-143-144-145-146-147-148-149-150-151-152-153-154-155-156-157-158-159-160-161-162-163-164-165-166-167-168-169-170-171-172-173-174-175-176-177-178-179-180-181-182-183-184-185-186-187-188-189-190-191-192-193-194-195-196-197-198-199-200-201-202-203-204-205-206-207-208-209-210-211-212-213-214-215-216-217-218-219-220-221-222-223-224-225-226-227-228-229-230-231-232-233-234-235-236-237-238-239-240-241-242-243-244-245-246-247-248-249-250-251-252-253-254-255-256-257-258-259-260-261-262-263-264-265-266-267-268-269-270-271-272-273-274-275-276-277-278-279-280-281-282-283-284-285-286-287-288-289-290-291-292-293-294-295-296-297-298-299-300-301-302-303-304-305-306-307-308-309-310-311-312-313-314-315-316-317-318-319-320-321-322-323-324-325-326-327-328-329-330-331-332-333-334-335-336-337-338-339-340-341-342-343-344-345-346-347-348-349-350-351-352-353-354-355-356-357-358-359-360-361-362-363-364-365-366-367-368-369-370-371-372-373-374-375-376-377-378-379-380-381-382-383-384-385-386-387-388-389-390-391-392-393-394-395-396-397-398-399-400-401-402-403-404-405-406-407-408-409-410-411-412-413-414-415-416-417-418-419-420-421-422-423-424-425-426-427-428-429-430-431-432-433-434-435-436-437-438-439-440-441-442-443-444-445-446-447-448-449-450-451-452-453-454-455-456-457-458-459-460-461-462-463-464-465-466-467-468-469-470-471-472-473-474-475-476-477-478-479-480-481-482-483-484-485-486-487-488-489-490-491-492-493-494-495-496-497-498-499-500-501-502-503-504-505-506-507-508-509-510-511-512-513-514-515-516-517-518-519-520-521-522-523-524-525-526-527-528-529-530-531-532-533-534-535-536-537-538-539-540-541-542-543-544-545-546-547-548-549-550-551-552-553-554-555-556-557-558-559-560-561-562-563-564-565-566-567-568-569-570-571-572-573-574-575-576-577-578-579-580-581-582-583-584-585-586-587-588-589-590-591-592-593-594-595-596-597-598-599-600-601-602-603-604-605-606-607-608-609-610-611-612-613-614-615-616-617-618-619-620-621-622-623-624-625-626-627-628-629-630-631-632-633-634-635-636-637-638-639-640-641-642-643-644-645-646-647-648-649-650-651-652-653-654-655-656-657-658-659-660-661-662-663-664-665-666-667-668-669-670-671-672-673-674-675-676-677-678-679-680-681-682-683-684-685-686-687-688-689-690-691-692-693-694-695-696-697-698-699-700-701-702-703-704-705-706-707-708-709-710-711-712-713-714-715-716-717-718-719-720-721-722-723-724-725-726-727-728-729-730-731-732-733-734-735-736-737-738-739-740-741-742-743-744-745-746-747-748-749-750-751-752-753-754-755-756-757-758-759-760-761-762-763-764-765-766-767-768-769-770-771-772-773-774-775-776-777-778-779-780-781-782-783-784-785-786-787-788-789-790-791-792-793-794-795-796-797-798-799-800-801-802-803-804-805-806-807-808-809-810-811-812-813-814-815-816-817-818-819-820-821-822-823-824-825-826-827-828-829-830-831-832-833-834-835-836-837-838-839-840-841-842-843-844-845-846-847-848-849-850-851-852-853-854-855-856-857-858-859-860-861-862-863-864-865-866-867-868-869-870-871-872-873-874-875-876-877-878-879-880-881-882-883-884-885-886-887-888-889-890-891-892-893-894-895-896-897-898-899-900-901-902-903-904-905-906-907-908-909-910-911-912-913-914-915-916-917-918-919-920-921-922-923-924-925-926-927-928-929-930-931-932-933-934-935-936-937-938-939-940-941-942-943-944-945-946-947-948-949-950-951-952-953-954-955-956-957-958-959-960-961-962-963-964-965-966-967-968-969-970-971-972-973-974-975-976-977-978-979-980-981-982-983-984-985-986-987-988-989-990-991-992-993-994-995-996-997-998-999-1000-1001-1002-1003-1004-1005-1006-1007-1008-1009-1010-1011-1012-1013-1014-1015-1016-1017-1018-1019-1020-1021-1022-1023-1024-1025-1026-1027-1028-1029-1030-1031-1032-1033-1034-1035-1036-1037-1038-1039-1040-1

SECRET

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

महाराष्ट्र के नौवां मुख्यमंत्री (1979-1980)।

1000

‘भारत-से युक्त पर भी संदेह,
युगाया सब न उन्नें जो गेह ॥

(मैथिली-द्वारा युग)

(ग) ग राधा भीरो का भावान,
गरी राधा पुनी का राज ।
बोबिला रोनी भन्तरधान,
बाला जगता पदाम गुरु-राज ।

(घ) दिवसने, गुरुदामने बो फूल,
ददय होना दिएने बो चन्द ।
दन्द दामने बो भाले मंद,
दीर उलका दामने का मन्द ।

(मराठी-दी वनी)

११. दण्ड

दण्ड दण्ड के दण्डो दण्डो मे १३, १४ माराए होनी है ।

दण्ड १० दण्ड ७ माराओ पर होनी है । जैसे—

(क) धेर से दण्डने, दणे का से ।
नी धेरने न बले, दिये नैगु ।
जो दिये नैगु हो, नदे दिये नो ।
दिये दिये नैगु से दिये नैगु ।

(ख) दण्ड दिये से दण्ड दण्ड से ।

हैं गिरांते न जो, गये भाँसू ॥

प्यास थी भाषरू, बचाने की ।

फिर मजबूत क्या कि पी, गये भाँसू ॥

(ग) चाल घाले न कब, चले चाले ।

चोचलों साथ चल, पड़े भाँसू ॥

मनचलापन दिखा, दिखा मपना ।

मन चलों से मचल, पड़े भाँसू ॥

(मयोध्यासिंह उपाध्याय)

१४. शक्ति

शक्ति के प्रत्येक पाद में १८ मात्राएँ होती हैं । पाद का प्रथम वर्ण लघु होता है और अन्त में सगण (। । ५) राग (५ । ५) या नगण (। । ।) होता है । इस की १ छी, ६ओ, ११वीं और १६वीं मात्राएँ लघु होती हैं । जैसे—

(क) मर, उठ कि मर तो सवेरा हुआ ।

नहीं दूर लेगा अंधेरा हुआ ॥

बहुत दूर करना तुझे है सफ़र ।

नहीं ज्ञान है राह घर की किधर ॥

(रामनरेश त्रिपाठी)

१. इस छन्द की चाल (गति) भुजंगी नामक वर्ण-वृत्त से मिलती है । उस के प्रत्येक पाद में वर्ण एक ही गण-क्रम से आते हैं, इस में नहीं । उस में इस में यही अन्तर है ।

बर्हिदा, वे बिना लिए, भाउ करने गये ?

बर्हि राउ-बर्हिदात, और करने गये ?

(मिथिनीदातण मुन)

१९. साधिका

साधिका एव के आयेक एव में २२ मायके होने हैं । यनि
(१) और ६ मायको एव होने हैं । जैसे —

(क) एव एवके में हैं एवके, एवके में केते,
दे एवके में केते, एवके में केते,
मुनि-एवके में एवके, एवके में केते,
एवके में एवके और, एवके में केते ।

(ख) एवके एवके एवके में केते,
एवके एवके एवके में केते, एवके में केते,
एवके एवके एवके एवके में केते,
एवके में केते, एवके में केते, एवके में केते ।

(ग) एवके एवके एवके में केते, एवके में केते,
एवके में केते, एवके में केते, एवके में केते,
एवके में केते, एवके में केते, एवके में केते,
एवके में केते, एवके में केते, एवके में केते ।

(घ) एवके एवके एवके में केते, एवके में केते,
एवके में केते, एवके में केते, एवके में केते,
एवके में केते, एवके में केते, एवके में केते,
एवके में केते, एवके में केते, एवके में केते ।

हरषि निरखि तुलसिदास, चरणनि रज पाई ।
(तुलसोदास)

प्रथम पद्य के एतौप पाद में यति उचित स्थान पर नहीं है।

२२. उपमान (अन्य नाम—रदपट या रदपर)

उपमान के हर एक पाद में २३ मात्राएँ होती हैं । ११ और १० मात्राओं पर यति होती है । प्रत्येक पाद के अन्तिम दो वर्ण शुद्ध हों तो अच्छा है, नहीं तो अन्तिम वर्ण अवश्य शुद्ध चाहिए । जैसे—

कमी सुयश पाता नहीं, है अत्याचारी ।
निरुद्यमी होता नहीं, सुख का अधिकारी ॥
उसकी मेज़िल का नहीं, अन्न कमी होता ।
आ अन्धा है एक तो, तिस पर है सोता ॥
(रामतरेश त्रिपाठी)

२३. रोला

रोला के प्रत्येक चरण में चौबीस मात्राएँ होती हैं । य ११ तथा १३ मात्राओं पर होती है । जैसे—

- (क) गूँज उठे अलि कूक, उठे कोकिल कुंजों में,
फुल फूल कर फूल, उठे पादप-पुंजों में ।
सख का यह आनंद, मधुर सौरभ कर संगी,
गन्धवाह यह चला, तुम्हारी ओर उमंगी ॥
- (ख) करो माथ लोकार, आज इस हृदय-कुसुम को,

हो होर कल भेट, कलकलेश्वर तुम हो !
 मीन की है कल, कल रर उम हो रर ?
 कलकल है कल, कल से रर की कल ?

(मिलन-मन्त्र)

(१) हो कलकल रर, होर मिह रर कलकल ।
 रर कलकल कलकल कल कलकल कलकल ।
 हो रर कलकल कलकल, कल रर हो रर कल ।
 मिह हो कल, कलकल कल कलकल ।

(२) कलकल कलकल, कल कल होर रर कल ।
 कलकल हो कलकल कलकल कल कल कलकल ।
 कल कलकल हो कलकल कल कल कलकल ।
 कलकल कलकल, कलकल कलकल कलकल ।

(कलकल-मन्त्र)

(३) कलकल कल कलकल होर मिह रर कलकल ।
 कल कल कलकल कल कलकल कलकल कलकल ।
 कलकल कलकल कलकल कल कल कलकल ।
 कलकल कलकल कलकल, कल हो कल कल कलकल ।

(कलकल-मन्त्र)

(४) कल कलकल हो कलकल कल कल कल कल ।
 कल कल कलकल कल, कलकल कलकल ।
 कलकल कल कलकल कल कल कलकल ।
 हो कलकल कलकल कल कल कल कल ।

(५) कल कलकल कलकल, कल कल कल कल कलकल ।

जब धीमा-नाथ से भनि, लपटी धनुंधरा हैं ।
 आने पयोइ लेकर, धीनिल बलिल धातां से ।
 संसार को सभो यह, सोला दिवित्र क्यों हैं ?
 बिलवी अपार माया, सर्वत्र व्याप्त-सी हैं ?
 भूगार प्रहृति बल बर, प्रनिक्षण मयोन अवता—
 बिबर को विरा रतों हैं, यह बाँन सा बलिक हैं ?

(गदनमोहन मिहिर)

२६. रूपमाने

रूपमाने छन्द के प्रत्येक पाद में १४ मात्राएँ होती हैं ।
 • १४ अक्षर १० मात्राओं पर होती हैं । प्रत्येक पादों के अन्त
 से एक ध्रुव, एक होने हैं । जैसे—

४. बृम्भल धा भूमि-जल को, धर्मे विपु को भाग
 दित रतें से प्रेम के हन-जल बल, बर बान ।
 लक्ष्मी, विर रत हन धा, प्रेम-रति को हन,
 हन रत धा, प्रहृति अरने, अर धर्मे बलिल ।

१. प्रेम-रति बलिल ।

(१०) यह प्रत्येक के १० ध्रुव-रति को बल बान
 बल धन धर्मे को धुम्भ, बलिल को धन धर्मे ।
 प्रेम-रति धर्मे को धर्मे को धन धर्मे को धन ।

१. प्रेम-रति १० प्रत्येक के १० धर्मे को धन धर्मे को धन
 धर्मे को धन धर्मे को धन धर्मे को धन धर्मे को धन
 धर्मे को धन धर्मे को धन धर्मे को धन धर्मे को धन

समस्तान् द्वितीयं च सुखं ज्ञानिहै सिद्धं लोकः ।

८। अतः सर्वत्र सुखं लभ्यते, हि अत्रं रहि दारं ।

आदौ यत् यत् यत्, रहितो मुनि-सत् ।

हि समस्तं सत्ताय दे अतः, अर्धं अर्धं अतः ।

रहितं चैव सत्ताय मुनि-सत्ता अतः ।

(वेदवदत्त)

११. अतः (अतः)

अतः अतः च अतः अतः च ११। अतः अतः अतः । अतः
अतः अतः अतः अतः अतः (११) अतः । अतः १ १, १ १
अतः अतः अतः अतः अतः —

१. अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः

अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः

अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः

अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः

२. अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः

अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः

अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः

अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः अतः

१. अतः, २. अतः

३. अतः अतः अतः

४. अतः अतः अतः

दुश्मनों को दियेगा, इस से पाने हों ।

अपने ही लक्ष्यों में हम से माने हगे ॥

(नाथूराम शर्मा)

मादृशो मादृशं हि, मादृशं तुभ्यं नमः ।

एतत् सर्वं श्री गुरुभ्यो नमः, अहं नमो सदा सदा ॥

कर्मदायी की हमारी, इस से विद्या है ।

विष्णु एव ही माहेश्वरं, समस्तं एतत् सत्यं ।

(तस्य दशैतत्तुम्ह)

३८. सप्तमः

समस्या का हल क्या खोजने में ०.६ से ०.८ आकार ले होगी है ।

[illegible]

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

५५ ५५ ५५

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

ॐ नमः शिवाय ॥

Figure 10-18

● ● ● ● ●

● ● ● ● ● ●

5-11 5: 5-11 5: 5-11 5:

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 84

‘सिंह हारत रत्न हारो न, नष्ट नगरात् सिंह ।’

[illegible]

एक १५ मासों पर चलि होशे हैं । अन्तिम दो चल गुरु होशे हैं । जैसे—

जिन्ह ही पक्षों हृदय में, गुरुजनों की सीमा पाद ।
 स्मरण साधन जो मुम, छोड़ दो प्यारे प्रसाद ॥
 हृदय बरदासरण का, सत्य है देश विनाद ।
 सत्य ही की जाँच होनी, है समस्त हो विनिपाद ।

(सम्मोह विनाश)

३८. चारु

एक एक के अकेले पाद में २८ मांसों होती हैं । १६
 १६ मांसों पर एक होती है । यदि बरणात्र में दो गुरु
 हो तो मांसों बढ़ जाता है । यदि बरणात्र में एक गुरु पा
 द हो तो दो ही एक होती है । जैसे —

[illegible]

2000

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840.



बैठे रहोगे और फय तक, भाग्य को रोते हुए ।
(मैथिली शरण गुर)

- (च) निरुपाधि-नारायण-निरंजन, निर्मेयामृत नित्य है ।
मत्ता मनादि अनन्त अनुपम, मध्र जल मादित्य है ।
परिभू पुरोहित प्राण प्रेरक, प्राज्ञ पूज्य प्रवेश है ।
करतार, तारक है तुही यह, वेद का उपदेश है ।
- (छ) कवि काल काष्ठानल कृपाकर, केतु कठणार्कट है ।
सुप्रधाम सत्य सुपर्ण सच्चिद्व, सर्वप्रिय स्वर्ग है ।
भगवान् भावुक-भक्त-वत्सल, भू विभू भुयनेश है ।
करतार तारक है तुही यह, वेद का उपदेश है ।
(नाथुराम शङ्कर)

३२. मरहटा

मरहटा छन्द के प्रत्येक पाद में २९ मात्राएं होती हैं ।
पादान्त में गुरु छद्म होते हैं । यनि १०, = १९ मात्राओं का
होती है । जैसे—

- १) यह सुनि गुरु बानी, धनु-गुन तानी जामी द्विज दुख दानि
तादृक्ता संहारी, दारुण मारी, नारी अनि बल जानि
मारीच विहायो, जलधि उनायो, मायो सबल सुबाहु
देयनि गुन पर्णो, पुष्पनि वर्णो, हर्षो अनि सुरनाड
(म) एक दिन रघुनाथक, सीय सहायक, रतिनाथक अनुहाति
हुम गोदाधारि तट, विमल पंच वट, बैठे हुने मुरारि
छवि देघत ही तन, मदन मध्यो मन, शर्पनछा तेहि का

नि सुंदर मन बरि, बालु धांज घर, सोली यचन रसाल ॥
 यह धे मुनि हरे, लप बल पूरे, विदित सनाह्य सुजाति ॥
 रूपा बहु धारनि, प्रति भवमात्नि, हे भाये बहु नीति ॥
 तुनि प्रभु भाईडल, मधुस मंडल, से दोऊ सुन आस ॥
 लो बहु बीरनि, लवणासुर हति, अति अजेय स्वप्नास ॥
 तुम ही भव लायक, ओ रघुनायक, उपमा दोऊ बाहि ॥
 तुनि आनख रंभा, जगन निवेना, भारि न अन्न न जाहि ॥
 लो लवणासुर जैने मधु मुद, मारे ओ रघुनाथ ॥
 जग जय सब भांगे, ओ लिय दोखे, दार हि लाने हाथ ॥
 (ईशवदास)

३३. सौंदर्य

[illegible][illegible]

१. संविधान का अर्थ है, राज्य का शासन करने का ढंग।
 २. संविधान का अर्थ है, राज्य का शासन करने का ढंग।
 (संविधान का अर्थ है, राज्य का शासन करने का ढंग।)

३८. लक्ष्मी *

लालच, लालच का ही एक भेद है । इस की प्रशंसा करना
 ही लालच का लालच है । और ऐसा लालच ही
 है जो लालच के लालच का लालच है । और—

१. विष्णुः शिवः ब्रह्मा ये त्रैलोक्यं पश्यन्ति ।
 तेषां भक्त्या यत्नः सत्त्वः सत्त्वः सत्त्वः सत्त्वः ।
 तेषां भक्त्या यत्नः सत्त्वः सत्त्वः सत्त्वः सत्त्वः ।
 तेषां भक्त्या यत्नः सत्त्वः सत्त्वः सत्त्वः सत्त्वः ।
 तेषां भक्त्या यत्नः सत्त्वः सत्त्वः सत्त्वः सत्त्वः ।

१. यदि विद्यार्थी का नाम है 'A' तो उसका नाम 'A' है।
२. यदि विद्यार्थी का नाम है 'B' तो उसका नाम 'B' है।
३. यदि विद्यार्थी का नाम है 'C' तो उसका नाम 'C' है।
४. यदि विद्यार्थी का नाम है 'D' तो उसका नाम 'D' है।
५. यदि विद्यार्थी का नाम है 'E' तो उसका नाम 'E' है।
६. यदि विद्यार्थी का नाम है 'F' तो उसका नाम 'F' है।
७. यदि विद्यार्थी का नाम है 'G' तो उसका नाम 'G' है।
८. यदि विद्यार्थी का नाम है 'H' तो उसका नाम 'H' है।
९. यदि विद्यार्थी का नाम है 'I' तो उसका नाम 'I' है।
१०. यदि विद्यार्थी का नाम है 'J' तो उसका नाम 'J' है।

[illegible]

गंध-श्रीः सदा बभूव, एवं ही जने मनकार ॥
 रत्न ही सदा सुखिनी रच्यो है, उतरो धन बो है विहार ।
 वेदना भदो सदा ही विद्या, बरना है जो विविध प्रकार ॥
 (गौरीदास साउदेवी)

三、研究

सुखम साह के अनेक साह से संसाधन होना है। यदि
1. 10 साधनों पर होना है। अनेक साह के अन्तिम दो साह
2. होना है। और—

[illegible]

विष्णुसहस्रनाम १०१

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥ २ ॥
 श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ३ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ ४ ॥
 श्रीविष्णवे नमः ॥ ५ ॥
 श्रीशिवाय नमः ॥ ६ ॥
 श्रीब्रह्माय नमः ॥ ७ ॥
 श्रीमहेश्वराय नमः ॥ ८ ॥
 श्रीनारायणाय नमः ॥ ९ ॥
 श्रीहरिभक्त्याय नमः ॥ १० ॥

1. 凡在本行开立存款账户的客户，均可向本行申请开立支票。
 2. 支票的有效期为自签发之日起六个月内。
 3. 支票的金额不得超过账户余额。

एतः पुनरपि रते कलम मन्त्र, मन्त्र मन्त्र मन्त्र 'उपनी' का पाठ ।

(३) दोन विर वर दाखला दिव.

‘‘ਸਾ. ਬਾਬੂ, ਕਦ ਮੰ. ਭਾਵ !

श्री गुरुभ्यो नमः

५० सुमरपकान हो जह ।"

"३११ रुई=५३४४ रुं विर श्री.

● ● ● ● ●

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

एक बार है सदा ।

१. २. ३. ४. ५.

सुप्रसन्न सुप्रसन्न वर सुप्रसन्न सुप्रसन्न

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

“विना हे कृष्ण हिता न सार ।”

५५५ ५५५ ५५५ ५५५

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

11 12 13 14 15

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

1. $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

Figure 1

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

Journal of Management Education 30(6)

[illegible]

ਕਹਿ ਮੇਰੇ ਭਾਈਆ, ਹੁਕਮ ਕਰੀਓ,

ਹੁਕਮ ਕਰੀਓ ਭਾਈ, ਕਰਮ ਕਰੀਓ ।

ਕਹਿਓ ਕਰਮ ਕਰੀਓ, ਕਰਮ ਕਰੀਓ,

ਕਰਮ ਕਰਮ ਕਰਮ, ਕਰਮ ਕਰੀਓ ।

(ਸਮਝ ਲਿਖ)

1੪ ਕਰਮ ਕਰਮ ਕਰਮ, ਕਰਮ ਕਰਮ,

ਕਰਮ ਕਰਮ ਕਰਮ, ਕਰਮ ਕਰਮ ।

ਕਰਮ ਕਰਮ ਕਰਮ, ਕਰਮ ਕਰਮ

ਕਰਮ ਕਰਮ ਕਰਮ, ਕਰਮ ਕਰਮ ।

ਕਰਮ ਕਰਮ ਕਰਮ, ਕਰਮ ਕਰਮ

ਕਰਮ ਕਰਮ, ਕਰਮ ਕਰਮ ।

ਕਰਮ ਕਰਮ ਕਰਮ, ਕਰਮ ਕਰਮ

ਕਰਮ, ਕਰਮ ਕਰਮ, ਕਰਮ ਕਰਮ ।

15 ਕਰਮ ਕਰਮ ਕਰਮ, ਕਰਮ ਕਰਮ,

ਕਰਮ ਕਰਮ ਕਰਮ, ਕਰਮ ਕਰਮ ।

ਕਰਮ ਕਰਮ ਕਰਮ, ਕਰਮ ਕਰਮ

ਕਰਮ ਕਰਮ ਕਰਮ, ਕਰਮ ਕਰਮ ।

ਕਰਮ ਕਰਮ ਕਰਮ, ਕਰਮ ਕਰਮ

ਕਰਮ ਕਰਮ, ਕਰਮ ਕਰਮ ।

ਕਰਮ ਕਰਮ ਕਰਮ, ਕਰਮ ਕਰਮ

ਕਰਮ ਕਰਮ, ਕਰਮ ਕਰਮ ।

16 ਕਰਮ ਕਰਮ ਕਰਮ, ਕਰਮ ਕਰਮ

ਕਰਮ ਕਰਮ, ਕਰਮ ਕਰਮ ।

हुप हाताच होताच छल, बोध मदादिक भोग ॥
 (१) एगुप नही रोजन्य सम, सोल सरस भुङ्गार ।
 दिवाभनम वैभव नही, देखो निश दिचार ॥
 (२) धर की सोभा धरन है, मिय की सोभा प्रीति ।
 दुग की सोभा दुख है, रुप की सोभा मोति ॥
 (तिथ दुलारे विपाटी)

(३) दिस दीख बरो देखि हो, दिसा निलो बरो नेह ।
 बिसां बिसाटी के रहता, हे न जगज बा रंग ।
 (४) बौन एत एत का बरे, जिसे नही सिद्ध पास ।
 दुख एतरे लीव का, दिस का पूजां भास ।
 (५) मिहे दुले मे कर गये, बर बरना है भूल ।
 बारी से रहने नही बरा दुलार के पुन ।
 (अर्थमगम सिद्ध दयाभरण)

४. मातरा

मोरे हे लाले लाले हे दुग ३२ मातरा एत है ।
 निरु लाले हे ११ १२ और एत है १३ १४ । मातरा हे
 निरु लाले का दुग मातरा निरु लाले का एत, एत
 का दुग मातरा निरु है । जैसे -

(६) जित हे मातरा एत, एत मातरा एत है ।
 दुग मातरा एत, एत मातरा का मातरा ।
 (७) एत मातरा एत, एत मातरा एत है ।
 एत मातरा एत, एत मातरा एत है ।

‘श्रवण’ से अति-योग से, उपजा सब संसार है ।

एक अक्षर से अस्मिन् वा. शंकर तू बनाना है ॥

(माधुराम शंकर)

१) ‘श्रवण’ से अति-योग से, उपजा सब संसार है ।

एक अक्षर से अस्मिन् वा. शंकर तू बनाना है ॥

२) ‘श्रवण’ से अति-योग से, उपजा सब संसार है ।

एक अक्षर से अस्मिन् वा. शंकर तू बनाना है ॥

३) ‘श्रवण’ से अति-योग से, उपजा सब संसार है ।

एक अक्षर से अस्मिन् वा. शंकर तू बनाना है ॥

(माधुराम शंकर)

४) ‘श्रवण’ से अति-योग से, उपजा सब संसार है ।

एक अक्षर से अस्मिन् वा. शंकर तू बनाना है ॥

५) ‘श्रवण’ से अति-योग से, उपजा सब संसार है ।

एक अक्षर से अस्मिन् वा. शंकर तू बनाना है ॥

६) ‘श्रवण’ से अति-योग से, उपजा सब संसार है ।

एक अक्षर से अस्मिन् वा. शंकर तू बनाना है ॥

(माधुराम शंकर)

७) ‘श्रवण’ से अति-योग से, उपजा सब संसार है ।

एक अक्षर से अस्मिन् वा. शंकर तू बनाना है ॥

८) ‘श्रवण’ से अति-योग से, उपजा सब संसार है ।

एक अक्षर से अस्मिन् वा. शंकर तू बनाना है ॥

(माधुराम शंकर)

अभ्यासार्थ प्रश्न

१. शय और अतिशय उन्मों के लक्षण और उदाहरण देकर
एक पाठपरिचय अन्तर को स्पष्ट करो ।
२. शय और अतिशय उन्मों के लक्षण और उदाहरण लिख
कर उनके भेद को स्पष्ट करो ।
३. शय और अतिशय उन्मों में क्या अन्तर है ? एक एक
उदाहरण देकर उन्म को स्पष्ट करो ।
४. शय और अतिशय द्वितीय के भेद को स्पष्टकरा लियो ।
उनके का एक एक उदाहरण भी दो ।
५. शय, शय और अतिशय द्वितीय का एक एक उदाहरण
देकर उन्म में उन्म के लक्षणों को समझाने का प्रयत्न करो ।
६. शय और अतिशय उन्मों में शय का अन्तर स्पष्ट हो जाय
है ? उन्मों के उदाहरण दो ।
७. शय और अतिशय उन्मों के उदाहरण लिख कर शय
उन्म के लक्षणों को स्पष्ट करो ।
८. शय और अतिशय उन्मों के उदाहरण लिख कर शय
उन्म के लक्षणों को स्पष्ट करो ।
९. शय और अतिशय उन्मों के उदाहरण लिख कर शय
उन्म के लक्षणों को स्पष्ट करो ।
१०. शय और अतिशय उन्मों के उदाहरण लिख कर शय
उन्म के लक्षणों को स्पष्ट करो ।
११. शय और अतिशय उन्मों के उदाहरण लिख कर शय
उन्म के लक्षणों को स्पष्ट करो ।

एता सद हरि जाय, मऊ छाया में रहिए ॥

सोना लाइन पिय गये, खुना करि गये देश ।

सोना मिला न पिय मिले, रुपा है गये देश ॥

रुपा है गये देश, सोय रैन रूप नैराया ।

सोना हो पिरताम, पिया दिन बाधु न पाया ॥

बह निरिधर बहिराव, होत दिन सदै अयोना ।

बहिरि पिया छर जाय, बहा बहिरों हो सोना ॥

(निरिधर बहिराव)

सोना हू एका गदा, उद धा निरिधर नदान ।

दा हूना हूना एत पिया, भी भी एता सजान ॥

भी भी एता सजान, दान का मन न पाया ।

उभय एत के एत सोय निरिधर पिरताम ॥

बह सोय सजान, एत हू काद हो सोना ।

सोना हो बहिरों एत, पिया का एत हो सोना ।

सोना हो सोना, एत हो एत सजान सजान ।

एत सोय निरिधर का एत सोय सोय ॥

एत सोय एत, एत हो एत निरिधर सोय ॥

निरिधर एत सजान एत हो एत सोय ॥

सोय एत हो एत, एत हो एत सोय ॥

एत हो एत एत, बह सोय हो सोय ॥

सोना सोय सजान हो, एत एत हो सोय ॥

४. आर्यो

आर्यो के प्रथम तथा तृतीय पादों में १२, १२, दूसरे
पादों में १५ मात्राएँ होती हैं । इस प्रकार चारों
पादों का कुल मात्रा-संख्या ४९ है । पादों के अन्तिम चरण गुरु
हैं । इस छन्द का संस्कृत में हो अश्विज-छन्द है, हिन्दी
में । हिन्दी में जैसे—

राम राम राम, आर्यो राम ऊर्ध्व दहो नमः ।

रामो हरे राम, ऐहो देवराज विराम ।

(भक्तुष्टि)

निम्न लिखित पद्य, पद्यार्थ वा पाद किन छन्दों के हैं ?

(घ) १. धारन धरन सरन जन हेतु ।

सुलभ सकल बक्षर वृष्ट हेतु ।

२. स्वर्ग का तुलना उचित ही है यही ।

किन्तु सुरसरिता कहीं नगद कहीं ।

यह मरों का मात्र पार उतारनी ।

यह यही है उर्वरों के वृद्धों ।

३. मुनिगन निफट विहंग मृग कहीं ।

पायक धीवर किन्तु नगद ।

हित अनहित पशु पंथों में ।

मानुष हर हर मन विह्वल

४. लला आदि माया जगत् में ।

अनल लला लला लला लला

उलटी सुराज लला लला

लला लला लला लला लला

कम्मान धान लला लला

लला लला लला लला लला

५. ग्रहन क्षणिक लला लला

लला लला लला लला लला

पुत्र लला लला लला लला

लला लला लला लला लला

६. गिर लला लला लला लला

लला लला लला लला लला

१ ।

२ ॥

हीन ।

हीन ॥

उलटी ॥

२ ।

२ ॥

पद कमल परागा रस बहुरागा,

मन मन-मधुर करै पाना ॥

हा ! लाह ! उले भी भाव, गनाया मैं ने ।

विराट कृपण ही यहां, बनाया मैं ने ॥

कट जायेगे पुष्पभूमि की, पराधीनता के सप पादा ।

पांचालों की लाह रहेगी, होगा कुशासन का नाश ॥

सुखों से बचकिलों कटो है, परिमल नहीं परग नहीं।

किन्तु कुटिल नौरों के चुन्यन, का है इन परदाग नहीं॥

रान लला भड्ड रान लला, भड्ड रान लला भड्ड रान लला॥

किन्तु गरं का शोका जाया, दक्षिण गरं यह था तेरा ।

उजड़ गई फुटवारी सारी, बिगड़ गया सब कुछ मेरा ॥

पष्ठ अध्याय

वर्ण-सम-वृत्त (साधारण)

जिन छन्दों के चारों पादों में वर्ण-लेख्या और वर्ण-क्रम समान होते हैं, उन्हें वर्ण-सम-वृत्त कहते हैं। नीचे प्रमुख वर्ण-सम-वृत्तों का उल्लेख किया जाता है।

१. मल्लिका (१ अ, ग ल)

(मन्वन्ताम—समाना)

मल्लिका वृत्त के प्रत्येक चरण में रमण, अगण, शुद्ध और छप्पु के क्रम में आठ वर्ण होते हैं। क्रमे—

(क) कानरेश घृष नाय । धं कनाय-बंघु,
सोमित्र सवे समीप । देस देस

(ख) मम मे प्रगट होय । ईत्य को
मार के नृमिह .

(ग) गूँजने लगे मिलिन्द । कूँजने विहंग-वृन्द ॥

हो गया सुगन्ध घात । मल्लिका खिली प्रभात ॥

(रामनरेश त्रिपाठी)

२. श्लोक अनुष्टुप्

श्लोक अनुष्टुप् के चारों चरणों में ८, ८ घर्ण होते हैं । प्रत्येक पाद का पाँचवाँ घर्ण लघु होता है और छठा गुरु । सम (द्वितीय तथा चतुर्थ) चरणों का सातवाँ घर्ण भी लघु होता है । शेष घर्णों के विषय में गुरु, लघु की स्वतंत्रता है । सी स्पष्ट हो है कि यह अन्य घर्ण-सम-वृत्तों से इस अंश में कुछ विलक्षण है । जैसे—

(क) खनिषाद विरलौ का, और ही कुछ यस्तु है ।

वाक्यों में उनके होना, ईश का एयमस्तु है ॥

(मैथिलीशरण गुप्त)

(ख) यदा यदा हि धर्मस्या, नानिर्भवति भारत ।

(ग) अभ्युत्थानमधर्मस्य, तदात्मानं वृजान्मम ॥

(धर्मदूतभगवद्गीता)

३. चम्पकमाला (म न स, ग) ५, ५

चम्पकमाला वृत्त के प्रत्येक पाद में भगण, भगण, सगण और गुरु के क्रम से से १० घर्ण होते हैं । यानि ५, ५ घर्णों पर होनी हैं । जैसे—

शान्ति नहीं तो, जीवन क्या है ?

शान्ति नहीं तो, यौवन क्या है ?

- क) रानि ! भोगि गंहि नाथ कन्हारै ।
साथ गोष जन बावत धारै ॥
स्वागनार्थ सुनि बानुर माता ।
घार देखि मुद सुन्दर गाता ॥

(भानु कवि)

- ख) राज-राज दशरथ तनै जू ।
रामचन्द्र भुषचन्द्र बनै जू ॥
त्यो विदेह तुमहँ बर सीता ।
ज्यो चकोर मनया रुम गीता ॥

- ग) राज पुत्रकनि सों छवि छापे ।
राज-राज सब डेरहि बापे ॥
हीर चीर गज घाति लुटाये ।
सुंदरीन बहु मइष्ट गाये ॥

- घ) बानरेंद्र तब सों हंसि दोल्यो ।
मोत मेद जिय को सब सोल्यो ॥
बानि बारि परनस करीइ ।
रामचंद्र हंसि बाह बरीइ ॥
देखि राम बरषा झुनु भारै ।
रोम रोम बहुबा दुसदाई ॥
बात पास तन की छवि छारै ।
रानि पात बहु जानि न डारै ॥

बरे-सम-दूत

- (६) राजि ! जोगि गेहि नय बन्दार ।
 लय गोर जन बदन धार ।
 सगलपै सुनि बसुर नग ।
 धार देखि मुर सुन्दर नग ॥

(नवु बर)

- (७) राज-राज इराय सै दू ।
 जनबन्द सुबन्द सै दू ॥
 लो पिरेह तुम्हें कर लोका ।
 लो बहोर मरन हन गेला ॥

- (८) राज दुबहनि लो राजि धारे ।
 राज-राज तर बेरहि धारे ॥
 होर चोर मर बाजि लुधारे ।
 सुंदरीन बु मरुल गारे ॥

- (९) बन्देन्द्र तर लो हिति दोलो ।
 नोन नैदु हिर को तर दोलो ॥
 बली बलि दलत बरोंदु ।
 जनबन्द हिति रोर बरोंदु ॥

- (१०) देखि जन बरन मरु बर ।
 रोन रोन बुबा दुखदा ॥
 बल दलत मर को लो धार ।
 राजि दोलत मरु उजि न जार ॥

(फ) बड़ा कि छोटा कुछ काम कीजै ।
परन्तु पूर्वापर सोच लीजै ॥
बिना विचारे यदि काम होगा ।
कभी न अच्छा परिणाम होगा ॥

(मैयिली शरण गुप्त)

(ख) अनेक प्रह्लादि न भक्त पायो ।
अनेकधा वेदन गीत गायो ॥
तिन्हें न रामानुज बंधु जानी ।
सुनो सुधी केवल प्रह्ला मानौ ॥

(केशव दास)

(ग) अनन्तकल्याणि, सुधासरूपे ।
मज्जीयता दो मर देखनी में ॥
विशुद्ध वीणा लय माधुरी से ।
बनू कृपा-पात्र भक्तियों का ॥

(दयामाकान्त पाठक)

(घ) निजेशया भूतल देहधारी ।
अधम-वहारक धर्मधारी ॥
चले दशमोयर्हि मारिये को ।
मर्षा मनी केवल पारिये को ॥

(ङ) चले बर्या पावन पावक ले ।
प्रदक्षिणा राम-सियादू को दे ॥
गय न नंदीपुर धाम कीनों ।

का उच्चारण लघुवत् होगा ।

- (ग) निराकार ! आकार तेरा नहीं है,
फिस्ती भीति का मान मेरा नहीं है ।
सखा ! सख-संघाम से तू बड़ा है,
मुझे तुच्छता में समाना पड़ा है ॥
- (घ) मुझे बंध-बाधा सनाती नहीं है,
मुझे सर्वदा-शुक्ति पानी नहीं है ।
प्रभो, शंकरा नंद आनंद-दाना,
मुझे क्यों नहीं आपदा से छुड़ाना ?
- (ङ) बहूँ शोभना हुंदुनी दीह पात्रे ।
बहूँ भीम भंकार कनीटे सात्रे ॥
बहूँ मुंदरी बंदु पीना यज्ञात्रे ।
बहूँ बिजरी बिजरी ल सुगात्रे ॥
- (च) बहूँ नृत्यकारो नच शोभ सात्रे ।
बहूँ भाँट पीने बहूँ मल गात्रे ॥
बहूँ माद भाठ्यो बहूँ नाम पात्रे ।
बहूँ ताहिनी बेड़िनी गीत गात्रे ॥

(बेदावदास)

१—सब कुछ देने वाली ।

१—छत्रुवद पदा अथवा ।

२—एक राग है ।

३. ४—संघम स्वभाव वाली नद जति को नाचने गाने से लिखी ।

१६. तोटक (स स स स)

तोटक वृत्त के हर एक चरण में चार सगण (॥ ५) के क्रम से १२ घर्ण होते हैं । जैसे—

- (क) धरणीश धनेश जनेश रहा ।
 अनुकूल सदा अपिलेश रहा ॥
 सप से बढ़िया, घटिया कब था ?
 इस भाँति बढ़ा जय था तब था ॥
- (ख) अथ लों न कहीं यह देश मिला ।
 इंस का न जिसे उपदेश मिला ॥
 उस गौरव के गुण अमृत हुए ।
 गुरु के गुरु, शिष्य समस्त हुए ॥
- (ग) विगड़ी गति वैदिक धर्म पिना ।
 सुख-हीन हुआ शुन कर्म पिना ॥
 हठ ने जड़ धी अविकाश किया ।
 फिर आलस ने दल नाश किया ॥
- (घ) चियड़े तक भी न रहे तन पै ।
 धिक धूलि पड़े इस जीवन पै ॥
 अथलोक अमङ्गल दूज हुआ ।
 यस्त भारत का रस्त नष्ट हुआ ॥

(नाथूराम रायूर)

१७. इन्द्रवंशा (त त ज र)

इन्द्रवंशा वृत्त के प्रत्येक पाद में दो तगण, जगण और रगण के क्रम से १२ घर्ण होते हैं। जैसे—

- (क) भाये जयै सीय समेत राम है ।
छाये महा मङ्गल बाँध धाम है ॥
भ्राता भरत्यादि करें प्रनाम है ।
घाचा किये पूरित सर्व काम है ॥

(गदाधर भट्ट)

- (ख) तातां ! जरा आ लख नृ विचारि हो ।
को मार को दें मुख दुःख जीव ही ॥
संग्राम भारी कर आज यान सों ।
रे इन्द्रवंशा ! हर फौरवान सों ॥

(भानुकवि)

१८. मोतियदाम ज ज ज ज

मोतियदाम वृत्त के हर एक चरण में चार जगण के क्रम से १२ घर्ण होते हैं। जैसे—

- (क) गये तहँ राम जहाँ निज मान ।
फली यह बात कि है बन जान ॥
फलू जनि जी दुख पावहु माह ।
सु देहु असीय मिली फिरि आह ॥

(केशवदास)

रमापति विष्णु असंग अनूप ।

घंयों घँहि कारण घामन रूप ॥

(देवीप्रस्ताद पूण)

१९. वंशस्थविल (ज त ज र)

वंशस्थविल वृत्त के प्रत्येक पाद में जगण, तगण, जगण और रगण के फाम से १२ घर्ण होते हैं । जैसे—

(क) हरीनिमा का सुविराल सिंधु सा ।
मनोसता की रमणीय भूमि-सा ॥
विचित्रता का शुभ-सिद्ध-पीठ सा ।
प्रशान्त वृन्दावन दर्शनीय था ॥

(ख) अतीव उत्पण्ठित ग्याल-याल हो ।
सवेग जाते रथ के समीप ये ॥
परन्तु होते भक्ति ही मलोंन ये ।
न देखते ये जब ये मुकुन्द को ॥

(ग) अनेक गाये तुम त्याग दौड़ती ।
सदास जाकी पर-दान पास थी ॥
परन्तु पाती जब भी न दान को ।
पिशादिता हो पड़ती नितान्त धाँ ॥

(घ) निकालती जा जल कूप से रहीं ।
स-रज्जु सों भों नज कूप में धड़ा ॥
अनोप हो आनुर दौड़ती गई ।

१, २—घ और ए का उच्चारण हलुपड़ होगा ।

प्रप्रांगता चलुम को विलोकने ॥

- (६) वयस्क बूढ़े यह बाल बालिका ।
समी समुत्कण्ठित औ अधीर हो ॥
सवेग भाये दिग 'मंजु' यान के ।
स्व-छोचनों की निधि-व्याद भूटने ॥

- (७) स्वरूप होना त्रिमका न मय्य है ।
न वाक्य होते त्रिमके मनोद हैं ॥
अर्णव व्याप्त बनता सर्व है ।
मनुष्य सो भी गुण के प्रमाय से ॥

- (८) सदा करूँगा अपमृग्यु सामना ।
समीन हूँगा न सुगन्द-धन से ॥
कभी करूँगा अवहलता न में ।
प्रधान धर्माण परोपकार की ॥

- (९) प्रवाद होने तक शेष भ्राम के ।
सरक होने तक एक भी शिर ॥
सशक्त होने तक एक लोभ के ।
क्रिया करूँगा दिन सर्वभूत का ॥

- (१०) मुहुन्द चाहें वदु-उग के बने ।
सदा रहे या वह गोप वन के ॥
न तो लज्जे प्रब्रभूमि भूट वे ।
न भूट देगी प्रब्रमेदिनी उन्हें ॥

२०. मोदक (न म न म)

मोदक वृत्त के प्रत्येक चरण में चार भगन के ध्वनि से १२ गे होने हैं । जैसे—

(क) हो निज देश-मुबार करा, तय ।
उमनि के गुण बान करो जय ॥
कैवल्य है उद्देश कृपा सब ।
भूत भिटे मन-मोदक से क्या ?
(रामनरेश विषाही)

(ख) राजन मैं तुम राज बड़े बनि ।
मैं मुल मांगों तो' हेतु महाननि ॥
देव महापद हों नृप नायक ।
हैं यह कारज रामहि सायक ॥

(ग) सोनन दीरघ बाहु विराजन ।
देव सिहाने मरेधने' लाजन ॥
ऐतिन की महिराज बरानहुँ ।
हैं हिनकालिन की ध्यज मानहुँ ॥

(घ) राघव की दाँ बाँधु सौंदर ।
बाहु बनी परमेश्वर गिर अर ॥
राबल-देव हौं हने सब ।
बाज बहा निन को हन को सब ।
(देवराजराज)

१, २—ये धर्म नपुंसक धर्म प्रायः । ३—अप्रायः हैं ।

४—राघुसह उद्योग होगा । ५—विनीतत्व ।

मिल गई यदि ये विधि योग मे ॥
पर जिसे न मिलि कविता-मुद्या ।
रसिकता सिकता-सम है उसे ॥

(च) चतुर है चतुरानन सा वही ।
मुमग भाग्य-विभूषित भाल है ॥
मन ! जिसे मन में पर-काव्य की ।
रुचिरता चिर-ताप-करी न हो ॥

(रामचरित उपाध्याय)

(छ) यदु-विनोदित थीं घञ-यालिका ।
तरुणियाँ सय थीं तृण तोड़ती ॥
घलि गई यदुवार दयोवती ।
लख अनूपमता घञ-चंद की ॥

(भयोध्यासिंह उपाध्याय)

२२. तालनयन (न न न न) ६, ६

तालनयन वृत्त के चारों चरणों में चार चार नगण से होते हैं। अर्थात् प्रत्येक पाद में १२ १२ लघु घर्ण होते हैं।
६, ६ घर्णों के पाद विराम होता है। जैसे—

(क) विशिख सरश, परम दुखद ।
पुरुष वचन, कह न सुखद ॥
कर सुकथन, हृदय-हरन ।
सुखद अमृत, सरश वचन ।

(रामचरित)

संतति उपजन हीं निशि वासर ।

साधन नन मन मुनि नहीधर ॥

(ख) श्री रघुवर तुम हीं जगनायक ।

देखहु दशरथ को सुगदायक ॥

सोदर सहित पिता-पद पावन ।

पंदन विय सवहीं मनभावन ॥

(ग) मूरज चरण दिभोरण के अनि ।

आपु हि भरत पदारी महामनि ॥

हुंदुभि-धुनि बरि कै यहु भवन ।

पुष्प परापि तरपे दिवि देवन ॥

(घ) याम चलत नृप के युग लांचन ।

वारि भरित भये पारिद्-राचन ॥

पावन परि ऋषि के मज्जि-भोजहि ।

‘केशव’ उटि गये भानर भोजहि ॥

(केशवदास)

२५. वसन्ततिलका (न न इ ज, य ग)

वसन्त तिलका पूष के प्रत्येक चरण में लगाना, भगवत्, दो
अंगन और दो गुरु के शान में १४ पद होने हैं । जैसे—

(क) सोना महा-अद्भुत जान एकाद-देवता ।

समिध न दान अश्वर्षा निज नेत्र से पौ ।

२—दादल को सो जाना पाले । ६, ३—पुनः पुनः उदात्त
करना चाहिये ।

कोई दिग्गद-यश तो पड़ना दिग्याया ॥

कोई प्रयोग कर है परितोष देना ।

है किन्तु सत्य-हितकारक व्यक्ति कोई ॥

आँखों बनूप छवि है जिसने विलोकी ।

दंशी-निनाद मन में जिनने सुना है ॥

देना दिहार इस यामिनि में जिन्दों ने ।

कैसे मुकुन्द उनके उर में बँधेगे !

(अयोध्यासिंह उपाध्याय)

२६. मुकुन्द (ग न अ अ. ग न) ८, ६

मुकुन्द वृत्त के अंग्रेज वाद में गगन, भगन, दो जगन और गुर छपु के ब्रज में १४ धर्म होने हैं । आठ और छः धर्मों के बाद विराम होना है । जैसे—

समुद्र आक पर निर्य रही महर्षे,

है प्रीति, मज्जन बरों, उमरा महर्षे ।

है कौन तेनु पर हो, बर जो बरान,

हो नष्ट नष्ट पारने, तुम के मज्जन !

(निरुपमनररर मुनः !

७. चानर (र अ र उ र

चानर के चारों चरणों में गगन, भगन, गगन, भगन, और गगन के ब्रज में १४, १४ धर्म होने हैं । जैसे—

(क) चानर मुनः एक चर होन होर को ।

जानकी मनेर छिपु नारि गगन होर हो ।

- (च) कुल में सुपट लाल राखिका बिराज ही ।
 वन्द गोपिकाय के सुपग-रङ्ग साज ही ॥
 कल्प में लमझ लङ्ग दीन वेनु साज ही ।
 लच्छये विनोकि दच्छ मच्छरी सुलाज ही ॥
 (गदाधर मठ)

२८. शशिकला (न न न न ल) ६, ९

शशिकला के प्रत्येक पाद में चार नगन और एक लगन के रूप में १२ वर्ण होते हैं। अर्थात् १४ लघु वर्णों के अनन्तर एक गुरु वर्ण होता है। छ और नां वर्णों के बाद बिराज होता है। जैसे—

- (क) कहुँ द्विजगन, निहि सुख सुनि पड़ौ ।
 कहुँ हरि हरि, हर हर रह रंढौ ॥
 कहुँ सुग-रीसु, सुग-रति बंद निष ही ।
 कहुँ सुनि-गन, विनवन हरि हिष ही ॥
- (ख) बन भई बिकट विविध दुख सुनिने ।
 निरि गहवर, नग लगन के सुनिने ॥
 कहुँ लहि हरि, कहुँ निरिचर चर ही ।
 कहुँ दब-दहन दुलह दुख रह ही ॥
 (केशवदास)

* इस के प्रत्येक पाद में सात बार गुरु लघु (५।) के अनन्तर एक गुरु होता है। १—लज्ज कर । २—शशि । ३—न हो गई ।

१—जाने हैं । २—रोखी का दूब ।

बहु यजन करा के, पूज के निजों को ॥

यह सुवन निटा है, जो मुझे यत्न-द्वारा ।

प्रियतम, वह मेरा, कृष्ण प्यारा कहाँ है ?

(ब) मुखरित करता जो, सन्न को या शुको सा ।

कलरव करता था, जो खगों सा यनों में ॥

सुध्वनित पिक लों जो, घाटिका था यनाता ।

वह बहुविधि कण्ठों, का बिघाता कहाँ है ॥

(छ) धन धन फिरती है, छिन्न गाये अनेकों ।

शुक भर भर आँख, भौन की देखता है ॥

सुधि कर जिसकी है, शारिका नित्य रोती ।

वह निधि मृदुता का मंझु मोती कहाँ है ?

(ज) यदि दिन कट जाता, बीतती थी न दोषां ।

यदि निशि टलती थी, बार था कल्प होता ॥

पल पल अकुलाती, ऊबती थी यशोदा ।

रट यह रहती थी, क्यों नहीं श्याम आये ?

(झ) प्रति दिन कितने ही, देवता थी मनाती ।

बहु यजन करातो, विप्र के वृन्द से थी ॥

नित घर पर नाना, ज्योतिषी थी बुलाती ।

निज प्रिय सुत आना, पूछने को यशोदा ॥

(ञ) गृह दिशि यदि कोई, शीघ्रता साथ जाता ।

१—देवताओं को ।

२३, —रात । ४—आठ दिन, चार अरब पत्तोंस करोड़ वर्ष ।

रच्छा के मनुकूल कार्य सब में, साध लेता सदा ॥
 जाता है कहते मनुष्य यश में, है काल कर्मादि के ।
 होती है घटना-प्रवाह-पतिता-स्वार्थानिता संश्रिता ॥

(घ) ऊँचे दाहिम से रस्ताल-नद ये, भी आध्र मे शिरापा ।
 यों निष्प्रेष्य अमंज्य पादप कसे, वृन्दावती योव ये ॥
 मामो ये भयलोकने पथ रहे, वृन्दावनाधीश का ।
 ऊँचा शीश उठा मनुष्य-जनता के तुल्य उत्कंड हो ॥

(मयोध्यासिंह उपाध्याय)

(छ) सार्यकाल हवा समुद्र-तट की, नेरोग्य कारी यहाँ ।
 प्रायः शिक्षित सम्य छोग निन ही, धाते इसी से यहाँ ॥
 घंटे हास्य-विनोद-मोद करने, सानंद ये दो घड़ी ।
 सो शोभा उस हृदय की हृदय को, है नृमि देती यही ॥

(ज) छोटे भीर बड़े अहात जग में, देखो वहाँ ये खड़े ।
 सो भी हृदय विनिम्र, किन्तु हम का, ये हानिकारी बड़े ॥
 ले जाते घर-वस्तु देश-भर की, जाने कहाँ की कहाँ ।
 लाते बेयल ऊपरी चटक की, चीजें विदेशी यहाँ ॥

(कन्हैया लाल पोटार)

३४. स्रग्धरा (म र म न य य य) ७, ७, ७

स्रग्धरा वृत्त के प्रत्येक चरण में मगण, रगण, भगण,
 नगण और तीन यगण के कम से २१ वर्ण होने हैं । हर सानधे
 वर्ण के बाद विराम होता है । जैसे —

नाना फूलों-फलों से, अनुपम जग को,

घाटिका है विचित्रा ।

मोटा है मैकड़ों हो, मधुर सुख मया,

बोकिंग मलरीन १

बाँधे नी है मनेकों, परबन हरे,

मे सदा ब्रह्मजी ।

बाँधे है एक मनेकों, सुखि एक मने बाँ,

जे सदा मे रहा है ।

(समनेका विरही)

मरीज

मरीज विरही विरही एक हो मने मने है । पर मे मनेकों
मने है बाँधे मने-मने हो मनेकों बाँधे मने है । एक एक मे मे
मने मनेकों मनेकों बाँधे मनेकों बाँधे मने मनेकों है कि
मनेकों के मनेकों मनेकों बाँधे मने मनेकों मनेकों है ।

१४. मरीज मरीज । ३ मने

मरीज मरीज के मनेकों मने मे मने मनेकों मने मने
मने मे मने मने मने है । मने —

- (१) मने मनेकों है मने मने मने
मने मनेकों मने मनेकों है ।
मने मने मने मने मने मने
मने मने मने मने मने मने
मने मने मने मने मने मने
मने मने मने मने मने मने

१-१२ मने—मे मने मने मने मने ।

हो निहि नत्त गपन्द गहो ।
 गेट सनेन चकोर मरो.
 लुखी सन आठग चंद लपो ॥
 बालु मागन होन किरोट
 हु हुनोट सगन माड चहो ।
 नान्न र भरसान सुनिगट
 जमन सगन धान कपो ॥

(विनायक राव)

एक हो' धान कहा । रिपु जीतहि,
 दान करै रिपु जीतो कहा !
 एहि हयो. एह सौ. मनुमंदन,
 गहं हयो, द्विज दोन महां ॥
 दान सौ' कौ ! दिनि छह हयो,
 दिनि धानन रीह राव दियो ।
 दान दान ! दौ दिनिगो,
 दिनि सगनही मुनो' दानि दियो ॥

र गेट सगन चकोर हो नुन सान सगन माड कपो ।
 गहं हयो मनुमंदन बालु मागन किरोट मरो ॥
 गेट सगन लुखी सन आठग चंद लपो ॥
 गेट सगन लुखी सन आठग चंद लपो ॥
 गेट सगन लुखी सन आठग चंद लपो ॥
 गेट सगन लुखी सन आठग चंद लपो ॥

(बरदराज)

१-२ दे मर हयं लुखी सन आठग चंद लपो ।

१० पूर मोरे भनि सांभित क्यामजुं मैसी घनी सिर सुंदर खोटी ।
 गेलन काम सिरें अंगना पग पैजनी दाखन पीरो" कछोटी ॥
 ११ छवि को रमयान पिछोवन धारन काम कला निज खोटी ।
 काम से भाग दहे सजनी हरि-साथ सा लेगयो भाखन राटी ।

(रसमान)

१२ दुलर धी एतुलाय दने दुलही सिध सुंदर मंदिर माही ।
 गदनि सोन सदै मिलि सुंदरि, देर जुदा जुनि सिध पढ़ाही ॥
 गन बो" वध निहारनि जानिके बंधन के नग की परछाही ।
 सोने" सदै सुधि भूति सई घर टोकि रही पन टारनि माही ॥

(तुलसीदास)

१३ लील राम कहीना लख मे समुझीने बो भादि ससै बंधु माया ।
 सोनी राटी ॥ लरी दुपटी भर सोय दलाल का लहि" लाला ।
 लाल लोहिज दुंदर लख लहरी खबि सो समुझा नहिनाल ।
 लाल सोय लाल से भान लालक लालक लाल सुदाम ॥

(लोचनदास)

१४ लाल ली लालक लाल लाललालि का लाल लाल लाल ।
 लाल ली लाल लाल लाल लाल लाल लाल लाल लाल ।
 लाल लाल लाल लाल लाल लाल लाल लाल लाल लाल ।
 लाल लाल लाल लाल लाल लाल लाल लाल लाल लाल ।

(लालक लाल)

१-१-१-१ लाल लाल लाल लाल लाल लाल लाल लाल लाल लाल ।

१-१-१-१ लाल लाल लाल लाल लाल लाल लाल लाल लाल लाल ।

संयमशील बनो मतिमान

सुधार करो प्रण ठान बढोर ॥

खेत करो, धिक्क जीयन है

यदि नाम मिला जग में कुलंदोर ।

छोट छोटे बकपाद बनो बस

भारत-उदयति-चंद्र-चबोर ॥

(रामनरेश त्रिपाठी)

४०. दुर्मिल सर्वदा (८ सगण)

(अल्पनाम, चंद्रबला)

दुर्मिल सर्वदे के प्रत्येक पाद में आठ सगण (११५) के
बस से २४ पद होने हैं । जैसे—

(४) उपरोक्त प्रत्येक पद में अनेक

हृदि हैं कलुषात् सुधार सुखे ।

एत एतान् एतद्विधिं मेव अपे

एत वेद सुखान् विलस सुखे ।

दुःखान् एत एतान् एत

अल्पनाम सुखान् विलस सुखे ।

हृदि सुखान् एत विधिं मेव अपे

एत हृदि विधिं मेव अपे सुखे ।

(अल्पनाम सुखान्)

१—दुःख से सुखे के अर्थ ।

(च) दरसे यिन मोहनी मूरति

लालची लोचन मे कुटि कातर से।

तरसे ही रहै न लहै पतियाँ

पिय प्यारे, तिहारै लिखी कर से ॥

कर सेव यज्ञों की चितायौ

चहौं दिन पै भए द्रोपदीअंबर से।

परसे यिन नैन रहै घरजे

न रहे यन साधन यादर से ॥

(भक्तुनदास केडिया)

(छ) जफड़े हम को तुम खूब रहो,

परवा न हमें इस बंधन की ॥

कुछ सोच नहीं हम को इसका

नित है बढ़ती तनुता तन की ॥

रहता तुम में अनुराग जिसे

कुछ भीति उसे न किसी जन की।

तुम हो रहते जिसके मन में

खलता उस को न व्यथा मन की ॥

(गोपालशरणसिंह)

१, ९—इन घर्णों का उच्चारण लघुवत् होगा।

१—इस घर्ण का उच्चारण लघुवत् होगा।

जरा जब भावै ज्वरा की सहेली ।

नगै सब देह दत्ता जिय साय

रहै दुरि दौर दुराशा भकेली ॥

(केशवदास)

(ग) भकेली हौं है मुनि को यह

याल तऊ भय-भीत न रचैं लखावै ।

मनौ कुलहौं रघुवंत को चार

दुंयों जिय नेह-लता उलहौवै ॥

दलै गज-गंड-घलीन की प्रिय

जब घनु घोर कठोर भचावै ।

“धियो बहु धीरन सो चहुँ तोर

चलावत मो उर कौनुक छावै ॥

(सत्यनारायण कविरत्न)

४२. अरसात सवैया (७ भार)

अरसात सवैया के प्रत्येक पाद में सात भगण और एक
एगन के क्रम से २४ वर्ण होते हैं । जैसे—

(क) भाव भला उस के मन के

कित नाति कहूँ वह है न बखानता ।

हो न कभी उस ने सुब भी

भपना जन क्या न मुझे वह मानता ॥

२२—जरा भी । २३—कुल का नाशक ।

२४—पल्लवित करे ।

(घ) सोहन सर्वसहा सिव-सैल तें
 सैल हुकाम लतान-उमंग तें ।
 कामलता विलसैं जगदंघ तें बय हु
 संकर के बरवंग तें ॥
 मंकर-अंग हु उत्तम अंग तें उत्तम
 अंग हु चंद प्रसंग तें ।
 चंद जटान के जूटन राजत जूट जटान
 के गंग-नंग तें ॥
 (भर्तृहरिदास केडिया)

(ङ) साहस कै दस कै रिस कै जय माँगी
 बिदेस-विदा नृदु यानि सौं ।
 सो सुनि बाल रही मुरझाइ दहो घर
 बेलि ज्यों धीर दवानि सौं ॥
 नैन गरो हियरो भरि आयी पै थोट न
 आयी बहू वा सुजानि सौं ।
 सारैं अजौं हिय नाँझ गड़ी बे थड़ा
 अघियीं उनड़ो भँसुवानि सौं ॥
 (अलंकार आराध)

(च) जो मनवेद्य अनादि अनन्त
 अखंड अनन्य अनूप अकाम है ।
 जाइ निरूपहिं वेद सदा
 कहि नित्य निरोह निरंजन नाम है ॥

जो जनरत्नम बुद्ध-विमंजन

गीजन-गर्भे 'हरी' सुखधाम है ।

सोर त्रिलोक को भाष अष्टी,

वृषमानुष्मकी की गली को गुणधाम है ॥

(विषोयी हीर)

(७) मानन है भरविन्दन फूले

अष्टी-गन ! भूले कहा मँडपाने हो ।

कीर तुम्हें कहा काई छनी

भ्रम बिच के मोठन को छलपान हो ॥

'दामजू' ध्यायी न बेनी-बनाव

है पापी कटापी कहा इनपान हो ।

बोली बादन बाजनी बीन

कहा निगने मित्रि ध्यान जान हो ॥

(विस्तारीतान)

(४) व्यास वगै विन व्यासे भों व्यासे !

कहा इमि बीजन मान मलेर है ।

है 'जननाकर' वे निमि-बाधन तो

छवि-वाचन को नाशो नई ॥

है मन-मोहन मोहनी वे तो वर

१—२ वे सभी वर्ग कपुचन माने और बड़े भार्यते । इन वर्गों में भी कई बड़ बड़ ऐसे हैं जहाँ गुरु वर्गों का उच्चारण कपुचन बाला बहुरूप । विचारणी इसी प्रकार सब उन्हें सब बूढ़ होने, बड़ हवे विचार्य है ।

